Q. How far do you agree that history is continious dialogue between past & present?

Ans:- ई० एच० कार महोदय ने अपने ही प्रश्न 'इतिहास क्या है' में बतलाया है कि- इतिहास अतीत एवं वर्तमान के बीच चलनेवाला एक अनवरत् संवाद है। विभिन्न कालों में विभिन्न प्रकार से इस प्रश्न का उत्तर दिये जाने के बावजूद आज भी यह प्रश्न ज्यों का त्यों जिज्ञासापूर्ण है, लेकिन यदि कार महोदय की परिभाषा को मापदंड माना जाये तो किस हद तक इतिहास, अतीत एवं वर्तमान के बीच चलनेवाला अनवरत् संवाद है, इस बात की हमें जाँच करनी होगी।

यह निर्विवाद है कि, इतिहास का संबंध मुख्यतः अतीत से रहता है, किंतु इतिहास केवल मृत अतीत का अध्ययन नहीं होता बल्कि यह वर्तमान के सन्दर्भ में अतीत का अध्ययन होता है। यही समझ ऐतिहासिक प्रबुद्ध व्यक्ति को गैर-प्रबुद्ध व्यक्ति से अलग करता है। जैसा कि ब्रिटिश चिंतक कॉलिंगवुड महोदय का कहना है कि - "इतिहासकार जिस अतीत का अध्ययन कर रहा होता है वह केवल मृत अतीत न होकर बल्कि इतिहासकार के मस्तिष्क में सजीव अतीत होता है।" वास्तव में यह कहना कोई अतिशयोक्ति न होगी कि इतिहास की जड़ जितनी दृढ़ता से वर्तमान से जुड़ी रहती है उतनी ही दृढ़ता से अतीत से भी। अब प्रश्न उठता है कि अतीत एवं वर्तमान के बीच इतिहास का यह संबंध कौन एवं कैसे जोड़ता है? पुनः इतिहासकार कार महोदय का कहना है— इतिहास वस्तुतः इतिहासकार एवं तथ्यों के मध्य अन्तःक्रिया की अविच्छिन्न प्रक्रिया है तथा अतीत एवं वर्तमान के बीच चलनेवाला एक अनवरत् संवाद है।' इस प्रकार कार महोदय का कहना है कि ऐतिहासिक तथ्य एवं इतिहासकार, दोनों इतिहास को अतीत एवं वर्तमान से जोड़ने में बराबर की भूमिका अदा करते हैं। वास्तव में अनन्त विकास की कड़ी जिससे इतिहास का सृजन होता है, में तथ्य का संबंध अतीत से जबकि इतिहासकार का संबंध वर्तमान से होता है।

Scanned with CamScanner

तथ्य एक आईना समान होता है जो अतीत को परावर्तित करता है। यह अतीत के अवलोकन का माध्यम है। जिस अतीत को हम जानते है अथवा ढूँढ़ते है वह तथ्यों के द्वारा ही निरूपित होता है। किंतु तथ्य स्वंय नहीं बोलता, इतिहासकार उन्हें बुलवाता है। इतिहासकार अपनी व्याख्यात्मक पद्धति से तथ्यों को बोलने के लिए बाध्य करता है। यद्यपि 'रॉके' तथा 'ऐक्टन' महोदय ने इसका विरोध किया है किंतु 'डेविड थॉम्सन' महोदय ने इस मत का समर्थन किया है। इस प्रकार इनका कहना है कि इतिहास, इतिहासकारों के नजरिये से होकर आता है जो अतीत को इतिहासकारों द्वारा अपनी नजरिया से देखने का परिणाम होता है। जी. आर. ऐल्टन महोदय का कहना है - "इतिहास वही होता है जो इतिहासकार लिखता है।"

अब प्रश्न ऐतिहासिक तथ्यों के विश्लेषण का उठता है। कॉलिंगवुड महोदय ने इस विचार का कड़ा विरोध किया है कि तथ्यों को स्वंय बोलने के लिए छोड़ देना चाहिए। उनका कहना है कि - "तथ्य कुछ नहीं होता है बल्कि उसका विश्लेषण ही सब कुछ होता है।" जब इतिहासकार अतीत को खोजता है तब उसका स्रोत ही उसे गति प्रदान करता है। स्रोतों के महासागर में इतिहासकार अपने विवेकानुसार तथ्यों को ढूँढता है तथा अपनी बातों को कहने के लिए उसे स्वंय अनुसार वर्णन करता है। यही कारण है कि एक ही तथ्य होने के बावजूद 'बदाँयूनी' जहाँ अकबर की आलोचना करता है वहीं 'अबुल फजल' द्वारा उसकी प्रशंसा की जाती है। उसी प्रकार एक ही साक्ष्य को आधुनिक भारतीय इतिहास के उच्चवादी इतिहासकारों ने कॉग्रेस द्वारा संचालित भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को "जन-आंदोलन" की संज्ञा प्रदान की है जबकि सब-आल्टर्निस्ट समुदाय (Sub-alternist group) वालों ने इसे नीचे तबका का आंदोलन माना है वहीं कैम्ब्रिज समुदाय वालों ने इस आंदोलन को बुर्जुआ वर्ग के हितों के पूर्ति हेतू संचालित आंदोलन

Scanned with CamScanner

माना है। अतः एक ही अतीत को विभिन्न इतिहासकारों ने भिन्न-2 तरह से व्याख्या कर विभिन्न तस्वीर हमारे सामने प्रस्तुत की है।

प्रत्येक इतिहासकार अपने समाज की उपज होता है। सामाजिक वातावरण का प्रभाव उसके मस्तिष्क पर अवश्य पड़ता है। उसी के अनुरूप वह सोचता है तथा कार्य करता है। वास्तव में इतिहासकार अपने युग का प्रतिनिधित्व कर रहा होता है। इस सदी के आरम्भिक वर्षों में जब राष्ट्रवादी इतिहासकारों ने गुप्तकाल को "प्राचीन भारत का स्वर्णकाल" की अवधारणा प्रस्तुत की तो उनके विचारों पर उस काल का स्पष्ट छाप दिखलाई पड़ता है, किंतु वही जब आज के इतिहासकार उस स्वर्ण युग की अवधारणा को नकारते हैं तथा उस काल के गुणों एवं दोषों का विश्लेषण करते हैं एवं मुस्लिम शासनकाल को भी तटस्थ नजरिये से देखते हैं तो उनके विचारों पर 'धर्मनिरपेक्ष प्रभाव' स्पष्ट झलकता है। कोई इतिहासकार अतीत का लेखन वर्तमान को ध्यान में रखकर करता है अतः अतीत की व्याख्या को वर्तमान से अलग नहीं किया जा सकता, अर्थात् अतीत की व्याख्या पर वर्तमान का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। इस प्रकार इतिहासकार का विश्लेषण विधि जिसमें तथ्यों का संकलन एवं उनकी व्याख्या शामिल है, अतीत एवं वर्तमान के बीच अटूट संबंध कायम करती है। डेविड थॉमसन महोदय ने सही कहा है — जब तक अतीत को वर्तमान के प्रकाश में विश्लेषण नहीं किया जायेगा तब तक सही तरह से व्याख्या असम्भव है।" यह बोध इतिहासकार का है जो अतीत एवं वर्तमान के बीच सेतु का काम करता है।

अब प्रश्न यह उठता है कि क्यों अतीत को वर्तमान के प्रकाश में व्याख्या की जानी आवश्यक है? क्यों एक विषय जो अतीत से जुड़ा हुआ माना जाता है, को वर्तमान से जोड़ना आवश्यक है? इन सारे प्रश्नों का जवाब इतिहास के उपदेशात्मक प्रकृति में सन्निहित है। इतिहास का प्रमुख उद्देश्य मानव समुदाय को शिक्षित करना तथा

Scanned with CamScanner

नैतिक मूल्यों का पाठ पढ़ाना होता है, जिससे कि वर्तमान का मार्गदर्शन सम्भव हो तथा भविष्य सँवर सके। 'सर वालयर रेले' महोदय का कथन है – इतिहास का उद्देश्य अतीत के उदाहरणों द्वारा ऐसी शिक्षा प्रदान करना है जो मनुष्य की इच्छाओं एवं कार्यों का मार्गदर्शन करें।" इतिहासकार अतीत के गर्भ में जाकर वैसे उदाहरणों को ढूँढता है जिससे हमारा वर्तमान एवं भविष्य का मार्गदर्शन हो सके। अतीत के ज्ञान के माध्यम से जहाँ एक तरफ इतिहासकार हमें आवश्यकतानुकूल बातों को बतलाता है वहीं हमारे लिए चेतावनी का भी काम करता है। वस्तुतः अतीत की आधारशिला पर वर्तमान का निर्माण करने तथा भावी मार्गदर्शन के लिए इतिहास मनुष्य को सक्षम बनाता है।

अतीत को भी वर्तमान की उतनी ही आवश्यकता पड़ती है। यदि कोई इतिहासकार को वर्तमान एवं समकालीन समस्याओं की गहरी समझ होगी तभी उसके पास इतिहासकार ई० एच० कार के अनुसार अतीत एवं उनकी समस्याओं की 'परिकल्पनात्मक समझ' होगी। यह समझ आवश्यक है क्योंकि अतीत हमारा मार्गदर्शन करता है अतः हमारे वर्तमान एवं भविष्य के मार्गदर्शन के लिए यह जरूरी है कि अतीत के बारे में हमें सही समझ हो। इतिहासकार डेवी (Dewy) ने सही कहा है – अतीत के प्रति निष्ठा न तो उसके लिए है और न तो अतीत के लिए, बल्कि सुरक्षित एवं सुसम्पन्न वर्तमान के लिए है कि वह सुखद भविष्य का निर्माण करेगा।" अतः यह इतिहासकार के लिए जरूरी हो जाता है कि वह अपने को वर्तमान से जुड़ा रखकर ही अतीत का अध्ययन करें क्योंकि वही अतीत एवं वर्तमान के बीच कड़ी का काम करता है। अतीत को समझने की कुंजी वर्तमान में है। कार के शब्दों में - Great history is written precisely when the historian vision of the past is illustrated by insight into the problems of the present.

Scanned with CamScanner

दूसरी ओर यह भी सही है कि वर्तमान को अतीत के मद्दे से ही समझा जा सकता है। हमलोग वर्तमान के क्रियाकलापों को प्रमाणित करने के लिए अतीत की शरण में जाते हैं। आज भी अतीत के उदाहरणों की सहायता से ही कुछ समूहों द्वारा जातीय वर्चस्वता एवं स्त्रियों को अधीन रखने जैसी दकियानूसी विचार सुनने को मिलता है। इसके विपरीत स्त्रियों की मुक्ति तथा जात-पात के विरुद्ध आवाज का उदाहरण हमें अतीत से ही प्राप्त होता है। हमलोग अतीत से सबक भी लेते हैं। भारत ने प्रजातांत्रिक व्यवस्था इसलिए अपनाया क्योंकि वह विश्व में तानाशाही व्यवस्था की असफलता देख चुका था तथा इंग्लैंड एवं अमेरिका में सफल एवं प्रगतिशील प्रजातांत्रिक प्रणाली से भी अवगत हो चुका था। इस प्रकार कार महोदय का यह कथन सही प्रतीत होता है कि - "इतिहास-कार का कार्य न तो अतीत को प्यार करना है एवं न खुद को अतीत से मुक्त करना है बल्कि वर्तमान को समझने के लिए उसे अतीत के अध्ययन में दक्षता प्राप्त करनी चाहिए एवं अपनी समझ को वर्तमान की कुंजी के रूप में इस्तेमाल करना चाहिए।"

इतिहासकारों में यह कौशल होना चाहिए कि वह प्रत्येक इतिहास को समसामयिक इतिहास की प्रकृति प्रदान करे, अर्थात अतीत को वर्तमान के लिए प्रासंगिक बनाये। जब महान इतालवी चिंतक क्रोचे कहते हैं कि "सभी इतिहास समसामयिक इतिहास है" तो उनका कहने का यह अर्थ है कि प्रत्येक वर्तमान इतिहासकार अतीत का अपने दृष्टिकोण से अवलोकन करता है। अतीत को उस रूप में वह नहीं देखता जिस रूप में वह था। इतिहासकार अतीत का अध्ययन समसामयिक सामाजिक उपयोगिता के लिए करता है।

इतिहास का यह समसामयिक प्रकृति बदलती रहती है। सभी इतिहासकार यह मानते हैं कि इतिहास गतिहीन नहीं होता यह एक निरंतर बदलाव की एक प्रक्रिया है। इससे पता चलता है

Scanned with CamScanner

कि जो प्रश्न आज के लिए महत्वपूर्ण है वह कल के लिए गैर-महत्वपूर्ण साबित हो सकता है क्योंकि जो चीज आज विद्यमान है वह कल अतीत में बदल जायेगा। 1940 के दशक में जापान यदि अमेरिका का शत्रु था तो वह आज नहीं है। उसी तरह पहले के इतिहासकारों का प्रिय वर्ण्य-विषय मध्य शासकों की जीवन-शैली एवं उनके सैन्य अभियान का वर्णन करना था जबकि आज के दौर में इतिहासकारों के लिए लोगों का सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक क्रियाकलाप ज्यादा मायने रखता है।

इस प्रकार इतिहास का यह विचार प्रगतिशील है एवं भविष्य को भी स्पष्ट झलक प्रदान करती है। जब हम यह कहते हैं कि प्रत्येक वर्तमान अतीत बन जायेगा तो हमारा कहने का यह भी तात्पर्य रहता है कि प्रत्येक भविष्य भी वर्तमान होगा। जो आज हमारे लिए भविष्य है वह एकदिन वर्तमान होगा और चूँकि वर्तमान अतीत से गहरी तरह से जुड़ा है अतः यह विचार अनिवार्यतः भविष्य को अतीत से जोड़ता है। इस प्रकार जब इतिहास को अतीत एवं वर्तमान के बीच अनवरत् संवाद माना जाता है उस वक्त इतिहासकार 'कार' महोदय यह भी स्वीकार करते हैं कि वर्तमान एवं भविष्य के बीच सामंजस्य स्थापित करना भी इतिहास की प्रकृति है। चूंकि इतिहास का सर्वोपरि उद्देश्य मानव-समाज को सीख देना है अतः यह सीख वर्तमान के दायरे तक ही सीमित न होकर भविष्य के प्रति भी होना चाहिए। कॉ महोदय का कहना है - इतिहास में अतीत का अध्ययन वर्तमान को प्रकाशित करने के लिए तथा भविष्य के मार्गदर्शन के उद्देश्य से किया जाता है। इस प्रकार इतिहास में अतीत, वर्तमान एवं भविष्य सभी का समान महत्व रहता है।

इतिहास में जब हम कारणों एवं परिणामों की चर्चा करते हैं तब हमलोग अपना सम्बन्ध केवल अतीत तक सीमित नहीं रखते हैं केवल वही कारण एवं परिणाम के बीच संबंध इतिहास में मायने रखता है जो अतीत एवं वर्तमान दोनों के लिए प्रासंगिक हो। यद्यपि

Scanned with CamScanner

कारण प्राय: अतीत से जुड़ा रहता है लेकिन परिणाम को वर्तमान से अलग नहीं किया जा सकता। हिरोशीमा एवं नागासाकी पर परमाणु बम के प्रयोग के पीछे जो भी कारण रहा हो किंतु इसका भयावह परिणाम आज भी पूरे विश्व को नाभिकीय लड़ाई से सचेत करता है।

इस प्रकार सभी पहलुओं में इतिहास का संबंध वर्तमान एवं अतीत दोनों से है। इसे इतिहासकार ई॰ एच॰ कार महोदय के शब्दों में अंत करना ज्यादा उचित प्रतीत होगा कि – "अतीत को वर्तमान के प्रकाश में ही देखा जा सकता है तथा वर्तमान को हम पूरी तरह अतीत के प्रकाश में ही समझ सकते हैं। अतीत के समाज को मनुष्य के लिए सुबोध बनाना एवं वर्तमान समाज पर उसकी पकड़ को और मजबूत करना, इतिहास का दुहरा कर्तव्य है।"

Scanned with CamScanner